भारत के पर्यटन स्थल एवं टूरिस्ट गाइड

पर्यावरण पर्यटन, मानव, प्रकृति और संस्कृति के बीच एक रचनात्मक संपर्क स्थापित करता है और पूर्वांतर क्षेत्र के पर्यटन स्थलों तक लोगों को आकर्षित करने की इनमें अपार क्षमता है। पर्यावरण पर्यटन का विचार सन् 2001 में भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने शुरू किया और इस उद्देश्य से उसने 26 जिओपार्क चिन्हित किए।

जिओपार्कों को उन राष्ट्रीय संरक्षित क्षेत्रों के रूप में परिभाषित किया गया है, जहाँ अनेक भौगोलिक दाय वाले स्थल मौजूद है। इन स्थलों में विशेष महत्त्व वाले दुर्लभ और सौन्दर्य की दृष्टि से विशेष अपील वाली वस्तुएँ और जीव-जंतु होते हैं।

पर्यटकों के लिए भारतीय बाजार विविधताओं भरा स्थान है। इन विविधताओं के आर्थिक पहलुओं को देखते हुए शिल्प आदि क्षेत्रों के संवर्धन हेतु ठोस सरकारी प्रयासों परिणाम एक नई आर्थिक संभावना के रूप में देखा जा सकता है तथा नए चिन्हित पर्यटन स्थलों पर ढांचागत सुविधाओं का विकास करने केवल शहरी नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसरों की उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है।

पर्यटकों के लिए कैम्पिंग स्थलों का संचालन करने से भी स्थानीय युवकों को काम मिल सकता है। इसके लिए उन्हें प्रशिक्षित जनशक्ति की जरूरत पड़ेगी। खान-पान के लिए भी कुछ विशेषज्ञों की सहायता लेनी पड़ेगी। खान-पान की सूची में स्थानीय पकवान, स्थानीय फल और सब्जियाँ, मीट, दूध, पोल्ट्री, अंडे तथा मछलियाँ स्थानीय रूप से प्राप्त की जा सकती हैं। कुछ ग्रामवासी प्रयास करके इन चीजों की आपूर्ति कर सकते हैं।

कुछ स्थानीय युवकों को गाइड के रूप में काम करने के अवसर मिल सकते हैं। ये आने वाले पर्यटकों को अडोस-पड़ोस की पहाड़ियों और जंगलों की सैर करा सकते हैं और स्थानीय वनस्पतियों और जीव-जंतुओं तता ऐतिहासिक और पौराणिक स्थलों की तरह अपने समुदाय और लोक-जीवन का परिचय दे सकते हैं।

स्थानीय पर्यटन स्थलों को रोचक ढंग से प्रस्तुत करके ये नाम कमा सकते हैं। स्थानीय बुनकर और कारीगर अपने उत्पाद प्रदर्शित करके प्रयटकों को आकर्षित कर सकते हैं। इन कारीगरों को अपने हस्तशिल्प और बनाए गए परिधानों को पर्यटकों के सामने प्रस्तुत करने के अवसर दिए जा सकते हैं।

पर्यटन गरीबी दूर करने, रोजगार-सृजन और सामाजिक सद्भाव बढ़ाने का सशक्त साधन है। 27 सितंबर 2003 को दुनियाभर में विश्व पर्यटन दिवस मनाया गया जिसका मुख्य विषय यहीं था। इस विषय से ही पता चल जाता है कि पर्यटन विकासशील देशों के लिए कितना सार्थक और महत्त्वपूर्ण है।

हालांकि पर्यटकों को अनेक विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है लेकिन संयुक्त राष्ट्र की रोम में सन् 1963 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय यात्रा एवं पर्यटन सम्मेलन में बहुत सरल शब्दों में इसका वर्णन किया गया है। अधिक कमाई के चलते पर्यटन क्षेत्र एक फलता-फूलता उद्योग बन गया है। इससे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बल मिलता है और इसमें स्थानीय पर्यावरण में सुधार लाने तथा परिवहन, होटल, खान-पान और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों में सेवाओं और माल की गुणवत्ता बेहतर करने की शक्ति निहित है।

पर्यटन से स्थानीय युवकों को नए-नए क्षेत्रों में रोजगार के अवसर मिलते हैं। पर्यटन से सांस्कृतिक गतिविधियों में तेजी आती है और पर्यटकों तथा उनके मेजबानों के बीच बेहतर और समझदारीपूर्ण संबंध विकसित होते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर इससे विदेशी मुद्रा की मोटी कमाई होती है, जो किसी भी देश के लिए महत्त्वपूर्ण है। सच्चाई यह है कि दुनिया के 83 प्रतिशत विकासशील देशों में पर्यटन विदेशी मुद्रा अर्जित करने का प्रमुख साधन है। पर्यटन सेवा क्षेत्र का एक ऐसा उभरता हुआ उद्योग है जिसमें अपार संभावनाएँ निहित हैं।

पर्यटन, रोजगार एवं वैश्विक संबंधों की आधारशिला है...

पर्यटकों के लिए भारतीय बाजार विविधताओं भरा स्थान है। इन विविधताओं के आर्थिक पहलुओं को देखते हुए शिल्प आदि क्षेत्रों के संवर्धन हेतु ठोस सरकारी प्रयासों का परिणाम एक नई आर्थिक संभावना के

रूप में देखा जा सकता है तथा नए चिन्हित पर्यटन स्थलों पर ढांचागत सुविधाओं का विकास कर न केवल शहरी, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसरों की उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है।

पर्यटन संसाधनों, सुविधाओं और सेवाओं आदि प्राथमिकताओं को बढ़ाकर पर्यटन क्षेत्र सामने आ रहीं प्रतिस्पर्धात्मक बाधाओं को दूर कर इस उद्योग में विकास की और आर्थिक संभावनाओं की तलाश की जा सकती है।

जम्मू मंडल के सबसे रमणीक और खूबसूरत पर्यटन स्थल पटनीटॉप में आने वाली की भीड़ देख यह आभास अवश्य होता है कि आखिर कुछ ऐसा तो है इसमें जो विश्वभर से पर्यटकों को आकर्षित कर पाने की शक्ति यह रखता है। हो भी क्यों न सब कुछ तो है इस स्थल में जिसे पाने के लिए पर्यटक कश्मीर में जाते हैं। उस कश्मीर में, जिसे धरती का स्वर्ग कहा जाता है ।

सीमावर्ती राज्य जम्मू कश्मीर के जम्मू मंडल में जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर जम्मू से 108 किमी की दूरी पर स्थित यह रमणीय और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर स्थल समुद्र तल से 6400 फुट की ऊँचाई पर हैं जहां लंबे-लंबे चीड़ और देवदार के पेड़ हर उस शख्स को अपनी और आकर्षित करते हैं जो प्रकृति प्रेमी हो। इसके अतिरिक्त सालभर इसकी खूबसूरत ढलानों पर जमी रहने वाली बर्फ भी पर्यटकों को अपनी ओर खींच लेने की शक्ति रखती है।

मंदिरों की नगरी जम्मू से 108 किमी की दूरी पर स्थित इस पर्यटन स्थल तक पहुंचने के लिए जम्मू से आम यात्री बस और टैक्सी का प्रयोग किया जा सकता है। हालांकि अब तो विश्व प्रसिद्ध तीर्थस्थल वैष्णोदेवी के आधार शिबिर कटरा से भी यात्री बसें मिल जाती हैं जो आने वालों को पटनीटॉप तक घुमाकर लाती हैं। जम्मू से पटनीटॉप की यात्रा साढ़े तीन घंटों की है मगर इसे अपनी इच्छानुसार बढ़ाया भी जा सकता है।

उधमपुर जिले में आने वाले इस पर्यटनस्थल को और खूबसूरत बनाने तथा अधिक से पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पटनीटॉप विकास प्राधिकरण का गठन भी किया गया है जो सिर्फ पटनीटॉप का ही नहीं बल्कि उसके आसपास पड़ने वाले और भी रममीय तथा धार्मिक स्थलों-सुद्धमहादेव, मानतलाई, चिनैनी, सनासर आदि का विकास करने में भी लगी हुई है क्योंकि अवसर ऐसा होता है कि आने वाले पर्यटकों में से अधिकतर, जिन्होंने बर्फ कई बार देखी हो, बर्फ को देखकर उकता जाते हैं तो उनके मन को बहलाने के लिए आसपास के पर्यटनस्थलों को भी अब विकसित कर लिया गया है।

हालांकि पटनीटॉप में गर्मियों में बहुत भीड़ होती है, लेकिन यहां आने वाले वर्षभर ही आते हैं। सर्दियों में कई फुट जमी और गिरने वाली बर्फ का आनंद उठाने के लिए भी लोगों का तांता लगा रहता है। सर्दियों में आने वाले तो स्कीइंग का आनंद भी उठाते है, जिन्हें एक सप्ताह में स्कीइंग सिखाने का प्रबंध भी अब जम्मू कश्मीर पर्यटन विभाग तथा जम्मू कश्मीर पर्यटन विकास निगम की ओर से किया गया है नाममात्र के खर्चे पर राज्य में कश्मीर के पहलगाम के क्षेत्र के उपरांत पटनीटॉप को स्कीइंग स्थल के रूप में याति प्राप्त करवाने में पर्यटन विभाग के जम्मू विंग का अच्छा खासा सहयोग रहा है। विभाग की मेहनत ही है कि आज पटनीटॉप में स्कीइंग और पैराग्लाइडिंग करने वालों की भीड़ भी लगी रहती है। हालांकि स्कीइंग के लिए तो पटनीटॉप की सबसे ऊँची पहाड़ी पर बनी छोटी और बड़ी स्लोपी का प्रयोग किया जा रहा है तो पैराग्लाइडिंग के लिए पटनीटॉप के साथ लगते नथाटॉप और सनासर क्षेत्र का। जो आप भी खूबसूरती की एक मिसाल है । पर्यटन विभाग की ओर से अन्य स्लोपी की तलाश तथा उनका विकास किया जा रहा है ताकि स्कीइंग तथा पैराग्लाइडिंग करनेके लिए आने वालों की भीड़ से निपटा जा सके।

पर्यटन विभाग की ओर से स्कीइंग तथा पैराग्लाइडिंग के साल में तीन से चार कोर्स करवाए जा रहे हैं और वह भी नाममात्र खर्चे पर, लेकिन इतना अवश्य है कि स्कीइंग के लिए जनवरी-फरवरी तो पैराग्लाइडिंग के लिए अक्टूबर की प्रतीक्षा करनी पड़ती है क्योंकि इसी समय के दौरान अधिक आनंदित हुआ जा सकता है। स्कीइंग और पैराग्लाइडिंग के साथ ट्रेकिंग तथा रॉक क्लाइंबिंग करने की इच्छा रखने वाले भी पटनीटॉप में अपनी इच्छा की पूर्ति करते हैं जिनके लिए भी सप्ताह सप्ताहभर के कई कोर्स करवाए जाते हैं।

पिछले कई सालों से इस पर्यटनस्थल के विकास में जुटे जम्मू पर्यटन विभाग की ओर से आसपास के क्षेत्रों के कई स्कूली छात्रों और अन्य बेरोजगारों को इन सभी रोमांचक खेलों का प्रशिक्षण देकर प्रशिक्षक के रूप में तैयार किया गया है। पर्यटन विभाग की योजना के अनुसार इससे स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिलेगा और वे आने वाले पर्यटकों को इन पटनीटॉप में आकर पर्यटक अपने आप को कश्मीर में पाता है क्योंकि पटनीटॉप की समुद्रतल से ऊँचाई श्रीनगर से भी अधिक है और जम्मू-श्रीनगर राजमार्ग के बीच पटनीटॉप ही एक ऐसा स्थान है तो सबसे ऊँचा है और सुबह -सवेरे पड़ने वाली धुंध व कोहरे के बीच सुबह की सैर का अपना ही आनंद होता है। लेकिन इतना अवश्य है कि आने वालों को अपने साथ गर्म कपड़ों का इंतजाम करके आना चाहिए चाहे वे गर्मियों में ही क्यों न आएँ। पटनीटॉप में दिन का प्रत्येक पहर अपने आप में मनोहरी छटा से लिपटा होता है जिसका आनंद लोग अपने अपने तरीके से उठाते हैं।

यहां पर ठहरने के लिए वैसे कई प्रायवेट होटल है और सरकारी व्यवस्था भी है। राज्य पर्यटन विभाग और पर्यटन विकास निगम के कई बंगले, हटें आदि है जहाँ पर्यटक रात गुजार सकता है। हालांकि अधिकतर पर्यटक दिनभर सैर सपाटा करने के उपरांत वापस लौट जाते हैं। यहां पर आने वालों की भीड़ कितनी है यह इसी से स्पष्ट है कि गत वर्ष दिन में जाकर शाम को वापस लौटने वालों का आंकड़ा छह लाख को भी पार कर गया है। और ऐसा भी नहीं है कि सिर्फ स्वदेशी पर्यटक ही पटनीटॉप में आते हों बल्कि विदेशों से भी लोग इसकी सुरज्य पहाड़ियों और मनोहारी छटा का आनंद उठाने के लिए आ रहे हैं।

नागालैंड पर्यटन - प्रकृति का अद्‌भुत चमत्कार :

डेस्टिनेशन आकर्षण होटल फोटो नक्शा

खूबसूरत वादियों के बीच, भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में बसा एक छोटा सा राज्य है नागालैंड। यह भूमि है विनम्र लोगों की, किसानों की, प्राकृतिक सौन्दर्य की, रोचक इतिहास और अद्‌भुत संस्कृति की। यहाँ का वन्य जीवन तथा समृद्ध वनस्पति और मनमोहक प्रकृति आपको मोहित करने के लिए पर्याप्त है। यह सब और भी बहुत सारे रहस्य छुपे हैं इस छोटे से प्रदेश में जो नागालैंड कहलाता है। अगर आपको सुन्दरता से प्यार है तो यह रहस्यमय भूमि आपको चकित करने में पूरी तरह से सक्षम है। इसकी प्राकृतिक सुन्दरता के कारण नागालैंड को पूरब का स्विटजरलैंड भी कहा गया है। सांस्कृतिक विरासत से परिपूर्ण, नागालैंड पर्यटकों के लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं। अगर साफ़ शब्दों में कहा जाये तो नागालैंड की यात्रा आपको वास्तव में माँ प्रकृति की गोद में ले जाएगी।

माँ प्रकृति और जीवंत नागालैंड

अगर आप नागालैंड की यात्रा करने की सोच रहे हैं तो यह जान लीजिये की यह नागाओं की भूमि प्राकृतिक दृश्यों से परिपूर्ण है। यहाँ की हरियाली, खूबसूरत वादियाँ, मनमोहक सूर्योदय और सूर्यास्त आपकी यात्रा को यादगार बना देता है और आप खूबसूरत यादें लेकर अपने घर वापस जा सकते हैं। अगर आप प्रकृति में रूचि रखते हैं तो नागालैंड से अच्छी जगह और क्या होगी ।

नागालैंड का भूगोल एवं जलवायु

नागालैंड अधिकांश पहाड़ी इलाका है। यह पश्चिम में असम, दक्षिण में मणिपुर और उत्तर में अरुणाचल प्रदेश से घिरा हुआ है। इस खूबसूरत राज्य में कुल सात प्रशासनिक जिलें हैं जिनमें 16 प्रमुख जनजातियाँ निवास करती हैं। और इस हर भर राज्य के जलवायु के बारे में क्या कहा जाए। यह मनमोहक भूमि यह दावा करता है कि यहाँ का जलवायु इतनी अच्छी है कि साल के किसी भी समय या मौसम में आप नागालैंड की यात्रा कर सकते हैं।

भोजन, लोग और संस्कृति

नागालैंड में अधिकतर मछली और मांस खाया जाता है। यह विभिन्न जनजातियों द्वारा अलग-अलग तरीके से पकाया और खाया जाता है। नागाओं के लोकप्रिय व्यंजनों में उबली सब्जियाँ, मांस से बने व्यंजन और चावल

शामिल है।

बात यह है कि स्थानीय लोगों का आतिथ्य सत्कार नागालैंड की यात्रा में चार चाँद लगा देता है। इनकी संस्कृति एक अंतहीन चर्चा का विषय है। नृत्य और लयबद्ध गीत इनकी दैनिक गतिविधि का हिस्सा है। यह कहा जा सकता है कि नागाओं के लिए जीवन एक उत्सव से कम नहीं।

नागालैंड में पर्यटक स्थल :

नागालैंड के कुछ आकर्षक और लोकप्रिय स्थानों में से हैं कोहिमा, दीमापुर, मोन, दोखा, फेंक, पेरेन, इत्यादि। तो ये सब कुछ जानने के बाद आपको किसका इंतजार हैं? तैयार हो जाइये अपनी अगली छुट्टियों में नागालैंड की यात्रा के लिए।

उत्तर प्रदेश - धर्मपरायणता और तीर्थस्थानों का पालना

अवलोकन डेस्टिनेशन आकर्षण होटल फोटो नक्शा

अगर घूमना आपका पेशा ही नहीं शौक है तो उत्तर प्रदेश पर्यटन के पास आपके लिए काफी कुछ मनोरम है और इसी वजह से मशहूर इस अद्‌भुत जगह को देखने देश विदेश से काफी लोग आते हैं। ताज की धरती, कथक नृत्य का उत्पत्ति स्थान, बनारस की पावन हिन्दू धरती, भगवान कृष्ण का जन्म स्थान, वह जगह जहाँ बुद्ध ने अपना पहला धर्मोपदेश दिया था, यह सब उत्तर प्रदेश के अन्दर ही आता है।

उत्तर प्रदेश की सीमा पर उत्तराखंड, हिमाचल और नेपाल उत्तर दिशा में पड़ते हैं, मध्य प्रदेश दक्षिण दिशा में पड़ता है, बिहार पूर्व में और हरियाणा पश्चिम में पड़ता है।

उत्तर प्रदेश के मशहूर तीर्थस्थान

भारत में भक्ति पर्यटन के लिए अगर उत्तर प्रदेश को शुमार न किया जाए तो कुछ अधूरा रहेगा। उत्तर प्रदेश पर्यटन श्रद्धालुओं को इसलिए भी अपनी ओर आकर्षित करती है क्योंकि यहाँ काफी मशहूर तीर्थस्थल हैं। बनारस एक ऐसी जगह है जिसको हिन्दुओं द्वारा मुक्ति या मोक्ष स्थल भी कहते हैं और यह देश विदेश में पर्यटकों के बीच मशहूर है।

उत्तर प्रदेश एक बेहद पवित्र जगह है और वैष्णवों के लिए महत्वपूर्ण जगह भी। भगवान कृष्ण और राम की जन्मभूमि क्रमश: मथुरा और अयोध्या भी उत्तर प्रदेश में ही है। कृष्ण से जुड़े अन्य स्थल जैसे वृन्दावन और गोवर्धन हैं जहाँ लोग पूरे साल उत्सव और उल्लास के लिए आ सकते हैं।

राम के बेटे लव और कुश का जन्म स्थान बिठूर भी यहीं है। महान संत जैसे कबीर, तुलसीदास और सूरदास भी इसी धरती पर हुए जिनका धर्मपरायणता से ओतप्रोत गीतों के प्रति लगाव मशहूर है। इलाहाबाद सबसे पुराने शहरों में गिना जाता है और यहीं पर तीन महत्वपूर्ण और पावन नदियाँ गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है। इस जगह पर मशहूर कुम्भ मेला लगता है जो देश और विदेश से भक्तों, यात्रियों और तस्वीर प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

यह बौद्ध धर्म के लोगों के लिए भी महत्वपूर्ण जगह है क्योंकि सारनाथ में ही बुद्ध ने अपना पहला धर्मोपदेश दिया था, कौशम्बी में अशोक स्तंभ है और यहाँ पर बुद्ध ने कई धर्मोपदेश दिए हैं, श्रावस्ती में बुद्ध ने कई साल गुजारे और कुशीनगर में उन्होंने नश्वर धूंधर गिराया। प्रभासगिरी हिन्दू और जैन दोनों धर्म के लोगों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। उत्तर प्रदेश के जगहों का पौराणिक कथाओं में काफी उल्लेख है और यह रामायण और महाभारत जैसे भारत के महाकाव्य के विकास के लिए जिम्मेदार है।

उत्तर प्रदेश का वन्य जीवन

रायबरेली का समसपुर बर्ड सैंक्चुअरी, चम्बल वाइल्डलाइफ सैंक्चुअरी, दुधवा राष्ट्रीय उद्यान कुछ ऐसी जगहें हैं जो पशु प्रेमियों को बरबस ही अपनी ओर खींचती है और यह उत्तर प्रदेश पर्यटन को सम्पूर्ण बनाता है।

ऐतिहासिक चित्रांकन

उत्तर प्रदेश अपने सुन्दर और श्रेष्ठ ऐतिहासिक स्मारकों की बदौलत देश और विदेश से पर्यटकों को अपनी तरफ खींचता है। आगरा के ताजमहल के अलावा, झाँसी, लखनऊ, मेरठ और अकबर द्वारा बनाया गया फतेहपुर सिकरी, प्रताबगढ़, बाराबंकी, जौनपुर, महोबा और एक छोटा खेती प्रधान गाँव देवगढ़, उत्तर प्रदेश के कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जो इतिहास और संस्कृति के बारे में काफी कुछ बयां कर जाते हैं।

उत्तर प्रदेश की जगहें जैसे अलीगढ़ जो अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी की वजह से एक महत्वपूर्ण ज्ञानपीठ है, बनारस, लखनऊ, मेरठ, झाँसी, गाज़ियाबाद, कानपुर, गोरखपुर, नोएडा उत्तर प्रदेश पर्यटन के लिए मशहूर शहर हैं।

उत्तर प्रदेश की संस्कृति, खाना और पंथ

भारत के महत्त्वपूर्ण नृत्य कलाओं में से एक, कथक की शुरुआत यहीं से हुई थी। भारत के दूसरे क्षेत्रों की तरह उत्तर प्रदेश की अपनी संस्कृति है और यहाँ गीत और नाच का प्रचलन ज्यादा है । उत्तर प्रदेश कई उल्लेखनीय हस्तशिल्प जैसे हाथों से छपाई, कालीन बनाना, धातु पर तामचीनी चढ़ाना, ब्रोकेड का काम, ब्रास और एबोनी के काम मशहूर है। कशीदाकारी का अनूठा नमूना, लखनवी चिकन ने देश तो क्या विदेश में भी प्रशंसा पायी है।

उत्तर प्रदेश की संस्कृति में भी हिन्दू और मुगल संस्कृति का सम्मिश्रण है जो प्रदेश के कई स्मारकों और व्यंजन में साफ झलकता है। अवधी खाना, कबाब, दम बिरयानी और कई मांसाहारी व्यंजन कुछ ऐसे व्यंजन हैं जो पर्यटकों के मुंह में पानी ला सकते हैं। स्वादिष्ट नमकीन जैसे चाट, समोसा, पकोड़ा आदि ने देश भर में लोगों के दिलों में अपनी अलग जगह बना ली है और इसकी शुरुआत उत्तर प्रदेश से ही हुई थी।

उत्तर प्रदेश के बारे में इतना कुछ जानने के बाद ऐसा कोई कारण नहीं है जो एक उत्सुक यात्री को यहाँ की खोज करने से रोक सकता है। इसके पास आपको देने के लिए काफी कुछ है और काफी कुछ है जो प्रतिबिंबित होना है।

भारत के दस मुख्य पर्यटन केन्द्र

कश्मीर

अपनी जीवन सुंदरता के लिए कश्मीर दुनिया भर में प्रसिद्ध है। कश्मीर के दर्शनीय स्थलों में से श्रीनगर, गुलमर्ग, डलझील, नागिन झील, परी महल और पहलगाम है। अपनी सुरम्य वादियाँ और पहाड़ों पर बसे गाँवों के लिए यह पर्यटकों के बीच अलग ही स्थान रखता है।

गोवा

गोवा भारत का सबसे छोटा राज्य है जो कि समुद्रतटों बीच के लिए जाना जाता है। यहाँ का सी-फूड, जल में खेले जाने वाले खेल इसे एक आनंद के स्थान के रूप में पहचान देते हैं। यहाँ स्थित अलोना का किला, गोवा म्यूजियम, चापोरा का किला अन्य पर्यटन आकर्षण हैं।

कन्याकुमारी

कन्याकुमारी को केप कोमोरिन के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ पर हिंद माहासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के जल का मिलन होता है। यहाँ से दिखने वाला सूर्यास्त का दृश्य मनोरम होता है।

जयपुर और उदयपुर

राजस्थान में स्थित जयपुर और उदयपुर अपनी कलात्मक और वास्तु सुंदरता के लिए जाने जाते हैं। उदयपुर में स्थित लेक पैलेस दुनिया के सबसे सुंदर स्थानों में से एक हैं। जयपुर में ही हवामंडल भी है जो वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।

केरल

भारत के सर्वाधिक सम्पन्न और शिक्षित राज्यों में से एक केरल मंत्रमुग्ध कर देनेवाली सुंदरता के लिए

भी आना जाता है। यहाँ फैली हरी भरी सुंदरता और नदियों में बोटिंग का अपना अलग ही आनंद है।

दिल्ली

दिल्ली भारत का आर्थिक केन्द्र होने के साथ ही देश की राजधानी भी है। यहाँ पर स्थित इंडिया गेट, राष्ट्रपति भवन, जामा मस्जिद और कुतुब मीनार को देखने के लिए पर्यटक वर्ष भर आते रहते हैं।

दार्जिलिंग

दार्जिलिंग को पहाड़ों की राजधानी कहा जाता है जो कि समुद्र तल से 2134 मीटर ऊपर स्थित है। यहाँ पर स्थित चाय के बागानों के लिए यह दुनिया भर में जाना जाता है।

मैसूर :

मैसूर कर्नाटक की सांस्कृतिक राजधानी है जो अपने महलों के लिए जाना जाता है। यहाँ पर स्थित मैसूर का महल विश्व प्रसिद्ध है, इस महल को अंबा विला के नाम से भी जाना जाता है। इस पहल को देखने के लिए प्रतिवर्ष लगभग 2.7 लाख पर्यटक आते हैं।

अंजता एलोरा

महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित, चट्टानों को काटकेर बनाई गई ये मूर्तिया बौद्ध धार्मिक कला का अद्‌भुत उदाहरण है। यहाँ पर पत्थरों की गुफाओं में बने मंदिर पर्यटकों को अपनी खूबसूरती से आश्चर्य चकित कर देते हैं।

बैंग्लूरु

भारत अपनी संस्कृति में विविधता और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए हमेशा पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। यहाँ गोवा जैसे राज्य है। इसकी समुद्रतट दर्शनीय हैं। केरल और कश्मीर प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं। इसके अलावा कन्याकुमारी अध्यात्मिक आकर्षण है।

पुरी, कोणार्क (ओडिशा), द्वारका, सोमनाथ, गीर (गुजरात), ऊँटी, कोडाईकेनाल, मैसूर, बेंगलुरू (द.भारत) आदि अन्य प्रमुख पर्यटन स्थल हैं ।

राजस्थान भारत की ऐतिहासिक धरोहर से परिपूर्ण राज्य है तो ताज महल अगरा में है। पूरे भारत में फैली विविधता, सौंदर्य और आकर्षण बरबस ही दुनिया भर वे पर्यटकों को अपनी ओर खींच लेता है।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(1) पर्यटन का क्या अर्थ है?

(2) दिल्ली के पर्यटन स्थलों के नाम बताइए?

(3) कश्मीर के पर्यटन स्थलों के नाम बताइए ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए :

(1) उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल (2) कन्याकुमारी (3) गोवा

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी प्रवृत्तिः अपने प्रवास के किसी भी एक पर्यटन स्थल के बारे में लिखिए।

शिक्षक प्रवृत्ति : विद्यार्थियों को गुजरात के प्रमुख पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी दें तथा मानचित्र में उन स्थलों का स्थान चिह्न कर बताएँ।